''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

JAYOTI VIDYAPEETH WOMEN'S UNIVERSITY, JAIPUR

(Format for Preparing E Notes)

Faculty of FEM

Faculty Name- **JV'n GIRIJA SHARMA (Assistant Professor)**

Program- III Semester B.A B.ED

Course Name - HINDI LANGUAGE

Session No. & Name – 1.11 Arguments for **हिन्दी गद्य की विधाएँ**

Academic Day starts with –

Greeting with saying **'Namaste'** by joining Hands together following by 2-3 Minutes Happy session, Celebrating birthday of any student of respective class and **National Anthem**.

Lecture Starts with-

Review of previous Session Arguments for -Against HINDI LANGUAGE

Topic to be discussed today- Today We will discuss about Arguments for **हिन्दी गद्य की विधाएँ**

Introduction & Brief Discussion About The Topic

साक्षात्कार (इंटरव्यू–साहित्य)– साक्षात्कार भी एक आधुनिक गद्य विधा है। इसमें भेंटवार्ता भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसके लिए 'इंटरव्यू' शब्द का प्रयोग होता है। यह विधा मूल रूप से पत्रकारिता की देन है। किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से पूर्व में ही निर्धारित किसी विशिष्ट विषय पर कुछ प्रश्न किए जाते हैं और प्राप्त उत्तरों को लिपिबद्ध रूप में प्रस्तुत करना ही भेंटवार्ता कहलाता है।

यह प्रश्नोत्तर शैली में लिखी जाती है। नाटकीयता इसका आवश्यक अंग है। जिस व्यक्ति से भेंट की जाती है उससे संबंधित व्यक्तिगत जानकारियों व संबंधित प्रसंगों का उल्लेख कर भेंटवार्ता को रोचक बनाया जा सकता है। हिंदी में वास्तविक और काल्पनिक दोनों प्रकार की भेंटवार्ताएँ लिखी जाती हैं।

हिंदी साहित्य के प्रमुख भेंटवार्ता लेखक एवं उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

1. चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' और विष्णु दिगंबर 'पुलस्कर'– संगीत की धुन

2. बनारसी दास चतुर्वेदी और रत्नाकर– रत्नाकर से बातचीत

3. बनारसीदास चतुर्वेदी और प्रेमचंद– दो दिन

4. श्रीकांत वर्मा और संकलित– अंधेरे में

5. पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' और रणवीर रांगा

6. राजेंद्र यादव और लक्ष्मीचंद जैन

गद्य काव्य– गद्य काव्य, गद्य और पद्य के बीच की विधा है। इसमें गद्य के माध्यम से किसी भावपूर्ण विषय की काव्यात्मक अभिव्यक्ति होती है। इसका गद्य सामान्य गद्य से अधिक सरस, भावात्मक एवं अलंकृत होता है। यह संवेदना की अभिव्यक्ति इस प्रकार करता है कि पाठक उसे पढ़कर रसमय हो जाता है। इसमें विचारों की अपेक्षा भावों की प्रधानता होती है। यह निबंध की अपेक्षा संक्षिप्त तथा वैयक्तिक होता है। इसमें केवल एक ही केंद्रीय भाव की प्रधानता होती है। इसकी शैली चमत्कारपूर्ण एवं कवित्वपूर्ण होती है। इसमें विचारों का समावेश भावों के रूप में ही होता है। गद्य काव्य में प्रेम, करुणा आदि भावनाएँ छोटे–छोटे कल्पना चित्रों के माध्यम से व्यक्त की जाती है।

हिंदी साहित्य के प्रमुख गद्य काव्य लेखक एवं उनकी रचनाएँ निम्न लिखित हैं–

1. राय कृष्ण दास– छायापथ, पगला, प्रवाल

2. वियोगी हरि– भावना, प्रार्थना, तरंगिणी

3. डॉ. रघुवीर सिंह– शेष स्मृतियाँ

4. माखनलाल चतुर्वेदी– साहित्य देवता

उपन्यास – का अर्थ होता है–सामने रखना। अर्थात उपन्यास वह विधा है जिसमें मानव जीवन के किसी तत्व को उक्ति उक्त रूप में समन्वित कर रखा जाये। उपन्यास को मानव जीवन का प्रतिबिंब भी कह सकते है। वस्तुतः उपन्यास में एक विस्तृत कथा होती है जो अपने भीतर अन्य गौण कथाएं समेटे रहती है। उपन्यास शब्द श्उपश उपसर्ग और श्न्यासश पद के योग से बना है। जिसका अर्थ है उप= समीप, न्याय रखना स्थापित रखना (निकट रखी हुई वस्तु)। अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर पाठक को ऐसा लगे कि यह उसी की है, उसी के जीवन की कथा, उसी की भाषा मे कही गई हैं। उपन्यास मानव जीवन की काल्पनिक कथा है। प्रेमचंद के अनुसार मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्रमात्र समझता हूँ । मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।

उपन्यास की परिभाषा

बाबू गुलाब के अनुसार,'' उपन्यास जीवन का चित्र हैं, प्रतिबिंब नहीं। जीवन का प्रतिबिंब कभी पूरा नही हो सकता हैं। मानव–जीवन इतना पेचीदा है कि उसका प्रतिबिंब सामने रखना प्रायः असंभव है। उपन्यासकार जीवन के निकट से निकट आता हैं, किन्तु उसे भी जीवन में बहुत कुछ छोढ़ना पड़ता हैं, किन्तु जहाँ वह छोड़ता हैं वहाँ अपनी ओर से जोड़ता भी हैं।"

श्यामसुन्दर दास के अनुसार,'' उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा हैं।''

प्रेमचंद के अनुसार,'' मैं उपन्यास को मानव चिरित्र का चित्र मानता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व हैं।''

हडसन के अनुसार,'' उपन्यास में नामों और तिथियों के अतिरिक्त और सब बातें सच होती हैं। इतिहास में नामों और तिथियों के अतिरिक्त कोई बात सच नहीं होती।''

उपन्यास की विशेषताएं

उपन्यास की उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषणणोपरान्त उपन्यास की निम्नलिखित विशेषताएं हैं–

1. यह अपेक्षाकृत विस्तृत रचना होती हैं।

2. उपन्यास जीवन के विविध पक्षों का समावेश होता हैं।

3. उपन्यास में वास्तविकता तथा कल्पना का कलात्मक मिश्रण होता हैं।

4. कार्य–कारण श्रंखला का निर्वाह किया जाता हैं।

5. उपन्यास में मानव–जीवन के सत्य का उद्‌घाटन होता हैं।

6. जीवन की समग्रता का चित्र इस प्रकार उपस्थित किया जाता है कि पाठक उसकी अन्तर्वस्तु तथा पात्रों से अपना तादात्मीकरण कर सके।

उपन्यास का उद्देश्य –किसी उपन्यास का प्रतिपाद्य केवल मनोरंजन करना होता है, तो किसी का सामाजिक मूल्यों का निर्धारण । किसी उपन्यास में कथावस्तु लिखने का ढंग फंतासी का होता है, तो किसी में सीधे–सीधे वर्णन किया जाता है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक उपन्यास का अलग रूप, तरीका या ढंग और उद्देश्य होता है ।